International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2015; 2(3): 788-790

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2015; 2(3): 788-790
www.allsubjectjournal.com
Received: 12-03-2015
Accepted: 27-03-2015
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

कु. अनिता पाटीदार
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

डॉ. मनीषा शर्मा
प्राचार्य – चोइथराम कॉलेज ऑफ
प्रोफेशनल स्टडीज, इन्दौर (म.प्र.)

ब्वततमेचवदकमदबमरू
कु. अनिता पाटीदार
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

'समकालीन कहानी में बदलते पारिवारिक मूल्य'

कु. अनिता पाटीदार, डॉ. मनीषा शर्मा

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद चारों ओर वातावरण में भयावह संत्रास, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार की स्थिति सर्वत्र व्याप्त थी। यह भी कहा जा सकता है कि जब गुणात्मक बदलाव होता तो उसका प्रभाव भी सभी क्षेत्रों पर पड़ता है। मानव जन्म से मृत्युपर्यन्त परिवार में रहता है, परिवार ही उसका मूलाधार होता है, उसी में रहकर जीवन जीता है तथा आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। ''उन दो या दो से अधिक व्यक्तियों का समूह जो रक्त, विवाह या गोत्र लिये जाने से संबंधित हो और साथ–साथ रहते हों।''[1]

परिवार का यदि निष्कर्ष निकालें तो परिवार, पति–पत्नी, बच्चों, माता–पिता एवं निकट के संबंधियों का ऐसा संगठन है जिसमें शिक्षा, अर्थ, प्रजनन, यौन संतुष्टि, सामाजीकरण आदि सुविधाएँ जुटाना उद्देश्य होता है।

जीवन मूल्य से तात्पर्य समाज में प्रचलित मान्यताएँ, आचार, धर्म, दया, ममता, परोपकार, नैतिकता, सहयोग, विश्वास, सहानुभूति आदि में लिया जा सकता है। मूल्य एक ऐसा मापदण्ड है जिसके द्वारा सम्पूर्ण समाज एवं संस्कृति महत्ता प्राप्त करें। इस कारण जो भी तत्व मानव के हितेषी हैं, आनंददायक हैं वह सब जीवन मूल्य की श्रेणी में हो सकते हैं। ''न केवल स्थापित मान्यताएँ ही मूल्य का क्षेत्र हैं बल्कि मनुष्य की क्षमता तथा उसके लक्षित जीवन मूल्यों को दिशा निर्देश करने का कार्य भी मूल्यों द्वारा किया जाता है।''[2]

मूल्य हमारे भीतर विद्यमान संस्कारों की परम्परा है जिसमें सामाजिक अनुभूति पर आधारित मान्यताएँ हैं। ''जीवन में जो कुछ अर्जित है, जो कुछ संवेदनात्मक ज्ञान और ज्ञानात्मक संवेदना के रूप में प्राप्त है। अर्थात् जो कुछ विशिष्ट अनुभव है और जीवन जगत संबंधी जो कुछ आत्मकृत सामान्यीकरण है जो भी जीवन मूल्य आत्मसात किये हैं और जिनके लिये संघर्ष किया है, जो संस्कार, जो आदर्श, जो यथार्थ हृदय का अनन्य अंग।''[3]

परिवार के सभी सदस्यों में परस्पर प्रेम, विश्वास, ममता, करूणा, स्नेह, आदर, सम्मान की भावना विद्यमान सनातन रही है किन्तु विकास के साथ मानव का दृष्टिकोण बदला तो साथ ही सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मूल्य में परिवर्तन द्रुतगामी रहे। जो मूल्य शाश्वत रूप में जाने जाते थे वे आज टूट रहे हैं। समकालीन कहानी जीवन की सच्चाईयों से निमर्म साक्षात्कार के लिये जूझ रही हैं। पारिवारिक मूल्यों के विघटन से रिश्ते फीके पड़े हैं, रिश्तों मे मानवीय संवेदनाओं का अभाव होने से आत्मीय संबंधों को भी बोझ की तरह ढोते प्रतीत हो रहे हैं। समकालीन कहानी में माता–पिता तथा संतान संबंध, पति–पत्नी, भाई–भाई, भाई–बहन, और ननद–भाभी आदि संबंधों में अनाम दूरियाँ विद्यमान हो गई हैं। कथाकार पारिवारिक मूल्यों को बड़ी सूक्ष्मता के साथ जाँच परख रहा है, संबंधों में तनाव, टूटन, जटिलता तथा संबंधों को जबरदस्ती ढोनी की लाचारी का मुखर रूप समकालीन कहानी में हुआ है। चूंकि साहित्य समाज का दपर्ण है अतः लेखक का उद्देश्य इन स्थितियों का समकालीन कहानी के माध्यम से समकालीन समाज से साक्षात्कार कराना है।

किसी भी सामाजिक परिवर्तन में एक नहीं अनेक कारक जिम्मेदार होते हैं। परम्परागत मूल्यों एवं मापदण्डों में होने वाले परिवर्तन के कारणों में औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण ने भूमिका निभाई है।

षिक्षा प्रणाली एवं आधुनिक विचारधारा ने नवीन पीढ़ी एवं पुरानी पीढ़ी के विचारों में भी विरोधाभास उत्पन्न कर दिया। नई पीढ़ी अविष्वास की पीढ़ी बनकर रह गई वहीं पुरानी पीढ़ी परम्परागत मूल्यों से जकड़ी रही। दोनों के टकराहट के कारण बदलाव निष्चित हो गया तथा संबंधों में तकरार उत्पन्न हो गई।

एक बड़ा कारण अर्थोपार्जन भी रहा है जिसने प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रिष्तों को प्रभावित किया। समकालीन समाज में अर्थ की महत्ता के आगे नैतिक मूल्य फीके पड़ गये हैं, मूल्यों के बदलने से सामाजिक संरचना में बदलाव आया है।

स्त्री आंदोलन एवं स्त्री षिक्षा के प्रभाव से स्त्री के भीतर स्वच्छंद जीवन निर्वाह करने की भावना पैदा हुई और इस प्रकार नारी माँ, पत्नी, बहू की भूमिका के साथ कार्यस्थल से जुड़ गई जिसके कारण पारिवारिक मूल्यों में परिवर्तन दृष्टिगत होता है। पारिवारिक मूल्य के रूप में समाज में विचारों, मान्यताओं, धर्म, संस्कृति, नैतिकता आदि में बदलाव तो आया ही साथ ही व्यक्तिवादी धारणा भी विकसित हुई।

परिवार में पारस्परिक व्यवहार में नैतिक एवं व्यक्तिक मूल्यों का विघटन तेजी से हुआ है, टूटते परिवार और बर्हिगमन के कारण पारिवारिक भूमिकाएँ भी बदली हैं। समकालीन समय में परिस्थितियाँ के तेजी से बदल जाने से तथा नवीन शक्तियों के बढ़ते प्रभाव के कारण पारिवारिक मूल्यों में बदलाव दिखलाई देता है।

मन्नू भंडारी की कहानी **'शायद'**[4] का पात्र राखाल जहाज की नौकरी करता है तथा उसके बीबी–बच्चों से दूर रहता है। पत्नी तथा बच्चों से लंबे अरसे से दूर रहने के कारण भावात्मक रिश्तों से वंचित रहना पड़ रहा है। छुट्टी में जब वह घर आता है तो परिवार में विशेष प्रकार का तनाव पैदा होता है। बच्चों के मन से पिता का बिंब खंडित होता नजर आता है। बच्चे पिता को अजनबी के रूप में देखते हैं, वहीं पत्नी माला भी उसके साथ मेहमान सा व्यवहार करती। यह सब देखकर राखाल को अपने ही संसार में जाना उचित लगता। कहानी में पारिवारिक मूल्य विघटन दिखाई दे रहे हैं तथा रिश्तों की अहमियत कहीं खोती जा रही है।

मृदुला गर्ग कृत कहानी **'लौटना और लौटना'** में माता–पिता उम्र के एक पड़ाव में बेटे का सहारा चाहते हैं किन्तु हरीश के मन में माता–पिता के प्रति कोई कर्तव्य भाव नहीं रहता वह अमरिकी तौर तरीके में बातचीत करता जिसके व्यवहार से माँ परेशान हो जाती है। ''परसों आया है तब से हरदम काटने को दौड़ रहा है।''[5] माता–पिता के प्रति बेटों का अब कर्तव्य परायण बोधभाव, सहानुभूति कहीं दिखाई नही दे रही। रिश्तों में स्वार्थ रिश्ता कायम है।

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी **'कुटुम्ब'** में पारिवारिक मूल्यों अत्यंत सशक्त रूप में प्रस्तुतीकरण हुआ है। मालकिन परिवार की मुखिया है। इस कुटुम्ब में बेटा, बहू, पोते, नातिन, बेटी, दामाद तथा अन्य रिश्तेदार साथ में रहते हैं। किन्तु भाई का बहन के प्रति व्यवहार कुछ इस प्रकार है ''अब उठाओ पोटली और भाई की आज्ञा मान विदा लो बिछालो डेरा सड़क के किनारे, किसी भी जगह।''[6]
इस प्रकार बेटा, बहन और दामाद को घर से निकलवा देता है तथा बहू, बेटा प्रसन्न हो जाते हैं। वहीं मालकिन बेबस और असहाय होकर कहती है ''बेटा, मैं इस कुटुम्ब से भरपाई मेरे लिये शहर में कोई छोटी–मोटी कोठरी ढूंढ दो, मैं अब यहाँ नहीं रहना चाहती।''[7] यहाँ मूल्य विघटन का जो चित्र उभर कर आया वह कारूणिक एवं दर्दमय है।

राजेन्द्र यादव की कहानी **'अपने पार'**[8] एक ऐसा परिवार है जहाँ पति–पत्नी और बेटा विकृति के शिकार हैं। बेटा पापा को चाहता है किन्तु पापा किसी अन्य स्त्री के साथ है उसे पसंद नहीं। वहीं माँ को भी उतना ही चाहता किन्तु माँ भी एक अंकल के साथ है। उसे माता–पिता साथ चाहिए किसी अन्य के साथ में उनकी उपस्थित पसंद नहीं और इस कारण वह छटपटाता है। तीनों सदस्य अपनी–अपनी जगह खण्डित हैं यहाँ पारिवारिक मूल्य विघटन प्रस्तुत हो रहे हैं।

रविन्द्र कालिया की कहानी **'डरी हुई औरत'** में भारतीय परम्परागत पति सिर्फ स्वयं के लिए नहीं बल्कि अपनी पत्नी को भी स्वतंत्र माहौल प्रदान करता है। गौतम अपनी पत्नी को मित्र खुषवंत के साथ अकेले घूमने भेजता है तथा खुषवंत द्वारा उपहार में दी गई साड़ी पहनने को कहता है पत्नी की मनःस्थिति को भी सहज बनाने में सहयोग करता है तथा मजाकिया तौर पर पत्नी से कहता है ''जरा सोचो तुम्हें अकेला देखकर खुषवन्त कितना खुष होगा – सारा दिन चहकता फिरेगा।''[9] इस कहानी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि अब पति परमेश्वर की धारणा बदल रही है, पति–पत्नी दोनों स्वतंत्र माहौल में मित्रवत दिखाई दे रहे हैं।

मन्नू भण्डारी की **'ऊंचाई'** कहानी पात्र षिवानी दाम्पत्य संबंधों में पति से बहुत–सी अपेक्षाएँ रखती हैं उसके विचार में ''.... यह संबंध इतना ज्यादा पवित्र है कि सारे संसार की अपवित्रता भी इसमें आकर पवित्र हो जाती है।''[10]
षिवानी विवाह पूर्व प्रेम को निसंकोच एवं अपराध बोध से मुक्त नजरिये से देखती है। नैतिकता–अनैतिकता के निर्णय को परिस्थितियों–सापेक्ष मानती है उसके प्रेम में अतुल आजीवन अविवाहित रहने की ठान लेता है तथा वियोग में जीती–जागती लाष बन जाता है। यह अनुभव कर षिवानी अपना शरीर समर्पित कर उसे नया जीवन देने का प्रयत्न करती है। शारीरिक पवित्रता को लेकर उसके विचार उदार है वह अतुल को समझाती है ''मेरा कुछ भी मिटने वाला नही है इसलिये दे रही हूँ।''[11] कथाकार ने अपनी पैनी दृष्टि से समाज के नवीन भावबोध को प्रकाशित किया है। यहाँ मूल्यों की परिवर्तित दृष्टि स्पष्ट दिखाई देती है।

अमरकांत कृत कहानी **'असमर्थ हिलता हाथ'** की नायिका मीना एक पढ़ी लिखी एवं सुषिक्षित लड़की है। वह पसंद के लड़के से शादी करना चाहती है लेकिन घर के लोग इसके विरोधी है, मीना की माँ भाई के कहने पर मीना पर भड़क उठती है। ''हे भगवान इसने हमारी इज्जत चौराहे पर फोड़ दी मैंने पैदा होते ही इसका गला क्यों नहीं घोंट दिया अब इसका पढ़ना लिखना बंद।''[12] अब शिक्षित युवती जिंदगी के फैसले खुद ले रही है परिणाम स्वरूप परम्परागत धारणाओं को धक्का तो पहुँचा ही साथ ही परिवार के सदस्यों में टूटन आ रही एवं मनमुटाव उत्पन्न हो रहे हैं।

मालती जोषी कृत **'क्षरण'** कहानी में समीर की माँ विमला प्रधानाचार्य है वह संघर्षषील महिला भाई के घर पर अपमान सहते हुए पढ़ाई पूरी की। अब समीर के साथ रहती है। सेवानिवृत्ति के बाद मंदिर जाना उसकी आदत थी जहाँ एक समझदार सीधी सच्ची महिला से उसका परिचय होता है, रोज–रोज मिलने से एक दिन वह उसे घर पर बुलाती है। वह शर्माईल को जाते समय गेट तक छोड़ने जाती तो उसका बेटा समीर भी जाता है तथा प्रणाम करता है। यह देख माँ का सीना गर्व से फूल जाता है उसे उस बेटे पर गर्व होने लगा था किन्तु थोड़ी देर बाद ही माँ का सारा गर्व चूर–चूर होता है जब घर के अन्दर प्रवेष करते ही बेटा कहता है – ''मम्मी इस बुढ़िया को ज्यादा मुँह मत लगाया करो बड़ी चेटू है।''[13] समकालीन समाज में बच्चे उन संस्कारों को नकार रहे हैं, उनका दृष्टिकोण बदल रहा है, अब संस्कारों में आदर, सम्मान भाव कम होते जा रहे हैं तो दूसरी ओर हाथ मिलाना, नमस्कार करना आदि तक ही सीमित होते जा रहे हैं।
बच्चों का व्यवहार माता–पिता के प्रति बदल रहा है। पाश्चात्य संस्कृति के साथ जीने का आदी भारतीय संस्कृति से कट सा रहा है। माता–पिता की हर छोटी–छोटी बातों पर बच्चे बिगड़ जाते हैं, उनके प्रति कोई सम्मान, आदरभाव नहीं रखते।

चित्रा मुद्गल की कहानी **'गेंद'**[14] में वृद्ध पिता सचदेवाजी का बेटा भी लंदन में रहता है। पिता मधुमेह से पीड़ित है पिता बेटे को पत्र लिखकर आग्रह करते रहते कि मुझे एक श्रवणयंत्र की आवष्यकता है किन्तु पिता की पेंषन वृद्धाश्रम को जाती इस कारण बेटे के पास पिता के लिए पैसे नहीं हैं पिता कटु स्मृतियों के सहारे अपना बुढ़ापा गुजारते हैं। ऐसी कई स्थितियाँ समाज में विद्यमान हैं।
समकालीन कहानी ने इस समस्या को यथार्थ चरितार्थ किया है। वृद्ध माता–पिता की आज यह ज्वलंत समस्या है।
समकालीन समाज में संतान सभी तरह के मूल्य सत्कारों से मुक्त है। आज रिष्ते वैसे नहीं रहे जैसे पहले थे। पारिवारिक जीवन में माता–पिता और संतान के रिष्तों में परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगत होता है। समकालीन कथाकार हिन्दी साहित्य जगत की ऐसी हस्ती है जो समकालीन होने के साथ कथा साहित्य में युगीन मूल्यगत परिवेष की सार्थकता भी प्रस्तुत करती है। वर्तमान समाज में मूल्य की त्रासदी तो दिखाई दे रही है किन्तु नये मूल्य अभी स्थापित नहीं हो पाये और यह एक विकट पहलू हैं जो विचारणीय है। **ममता कालिया** की कहानी **'वे'**[15] में भाई एवं बहन की स्थितियों को अंकित किया है। **मन्नू भण्डारी** की कहानी **'नकली हीरे'** में बड़ी बहन अपनी छोटी बहन सरन को स्टेषन लेने नहीं जाती क्योंकि वह बहुत बड़े व्यापारी की पत्नी है और छोटी बहन का पति स्कूल मास्टर है। उसको बहन की आर्थिक विपन्नता के कारण अपनी रेपोटेषन कम होने का डर है। वह अपने सहेली से कहती थी ''मैं खुद उसे लेने स्टेशन नहीं गई इस बात का उसे बुरा जरूर लगेगा पर भई कुछ भी हो अपनी 'प्रेस्टीज' और 'पोजीषन' का कुछ तो ख्याल रखना ही पड़ता है। अब नौकर, ड्रायवर सबके सामने वह थर्ड क्लास से उतरती या सेकिण्ड में से ही उतरती ... मुझे तो बड़ा ऑकर्वड लगता...।''[16]
यहाँ भी बहन–बहन में आपसी प्रेम नजर नहीं आता उनके बीच अर्थ की दीवार बन चुकी है जो भावना, स्नेह, प्रेम से बड़ी है।

मृदुला गर्ग की कहानी, **'उसकी कराह'** में सुधा को दिल का ट्यूमर है। वह दो–चार–छः माह में मरने वाली है। पति घर और फैक्ट्री की जिम्मेदारी निभाने के कारण अपनी माँ को बुलाने के बारे में सुधा से कहता है परन्तु सुधा अपनी सास का बीमार बहू के प्रति क्या व्यवहार हो सकता है, वह अच्छी तरह जानती है। ''जानते नहीं? आते ही कहना शुरू कर देगी इसे कुछ नहीं हुआ है, सब बहाना है, पिछली बार बेहोश होकर चूल्हे के पास गिरी थी तब क्या हुआ था?''[17] सास–बहू के संबंधों में सम्मान, आदर का भाव कम दिखाई दे रहा, दोनों एक–दूसरे के साथ रहने के बजाय अलग–थलग स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यहाँ दोनों अपनी स्वतंत्रता को बाधित नहीं करना चाहते। सास की एकाधिकार और सम्मान की चाह में यह रिश्ता भी दम तोड़ रहा है और अब नई धारणाएँ विकसित हो रही हैं।

अमृता प्रीतम की कहानी **'हीरे की कनी'** में पात्र जिंदो अभी–अभी ब्याह कर ससुराल आई है। ससुराल में दूर के रिष्ते में ननद लगती वह अपने भाई के साथ गाँव में ही रहती है एवं परित्यक्ता हैं। किन्तु भाई का पूरा घर वही देखती हैं। जिंदो को अपनी सहेलियों की बात याद आई ''परित्यक्ता ननदें हड्डियों का रोग होती हैं जहाँ नंदो की सरदारी हो वे घर नहीं बसते।''[18] ननद का व्यवहार देख सहेलियों की बातें पक्की लगती हैं।
इन परिवर्तनों से पारिवारिक, सामाजिक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है जिससे बिखराव आ रहा है। इसके परिणाम स्वरूप पारम्परिक स्नेहिल संबंधों में नये आयाम विकसित हुए। भौतिक युग की भागम–भाग लालसा से पारिवारिक रिश्तों में अशान्ति उत्पन्न कर दी है। भारतीय संस्कृति में सामाजिक जीवन की मूर्तिवान अभिव्यक्ति है जिसमें परम्पराओं, मूल्यों, रिश्ते–नाते, भावनाओं, आर्दशों, आपसी प्रेम, सामंजस्य, दौहाद्र एवं मानवीयता का स्थान है। सभ्यता के विकास के साथ सांस्कृतिक मूल्यों में भी परिवर्तन हो रहा है। एक ओर व्यक्तिक स्वतंत्रता को बढ़ावा मिला तो दूसरी ओर पारिवारिक मूल्यों को नकारा है। व्यक्तिगत जीवन में संक्रीर्ण मानसिकता उत्पन्न हुई है।
भाई–बहन का अटूट पवित्र संबंध अनूठे प्रेम में बदलते समीकरण में पैसे पर केन्द्रित कर दिया है तो सास–बहू के रिश्ते भी आत्मीयतापूर्वक कम ही मिलते हैं। बहू नवीन जीवन मूल्यों के अनुकूल जीवन जीना चाहती है तो दूसरी ओर पारिवारिक परम्पराओं की सीकचों में जकड़ी हुई नारी छटपटाहट भी महसूस कर रही है। देवरानी–जेठानी, ननद–भाई के बीच मित्रवत एवं बहनवत प्रेम जैसी स्थितियाँ फीकीं पड़ रही हैं। आधुनिक जीवनशैली ने हमारे नैतिक प्रतिमानों को बड़ी निर्ममता से तोड़ा है।
समकालीन कहानी पारिवारिक मूल्यों को अनेक रूपों में प्रस्तुत करती है। कहानियों में मूल्य प्रतिपादन की दृष्टि से समाज तथा परिवार के व्यापक संदर्भों को प्रस्तुत किया है। कहानी निरंतर संबंधों की तलाश कर रही है अतः उसकी कलम पर गहरी पकड़ है। समकालीन कहानी में नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को अनदेखा कर रही है जिसके मूल में देखें तो बदलते सामाजिक परिवेश में जीवन मूल्यों का क्षरण है। विकास की तेज रफ्तार इन पारिवारिक मूल्यों को झकझोर रही हैं। पुरातन मूल्य की जड़ें हिल रही हैं जिसके नतीजे में समकालीन समाज का पारिवारिक बिंब कहीं भीतर से विघटित हो रहा है, अन्ततः कहा जा सकता है कि प्राचीन एवं नवीन जीवन मूल्य में संघर्ष, खींचातान के कारण असंगतियों का पनपना जाहिर है।[1]

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. एस.एल. दोषी, पी.सी. जैन : समाजशास्त्र, नई दिशाएँ, पृ–394
2. ।द प्दजतवकनबजपवद जव चैपसवेवचीलए ठतपहीजउंद ंदक ठमबाए चण. 203
3. आलोचना, अप्रैल–जून 1986, पृ–6–7

4. मन्नू भंडारी : सम्पूर्ण कहानियाँ, शायद, पृ–421
5. मृदुला गर्ग : संगति–विसंगति, सम्पूर्ण कहानियाँ–1, लौटना और लौटना, पृ–23
6. कृष्णा अग्निहोत्री : टीन के घेरे, कुटुम्ब, पृ–53
7. कृष्णा अग्निहोत्री : टीन के घेरे, कुटुम्ब, पृ–56
8. राजेन्द्र यादव : संकलित कहानियाँ, अपने पार, पृ–168
9. रविन्द्र कालिया : नौ साल छोटी पत्नी, डरी हुई औरत, पृ–87
10. मन्नू भण्डारी : सम्पूर्ण कहानियाँ, ऊँचाई, पृ–349
11. मन्नू भण्डारी : सम्पूर्ण कहानियाँ, ऊँचाई, पृ–351
12. अमरकांत : अमरकांत की सम्पूर्ण कहानियाँ, खण्ड–2, असमर्थ हिलता हाथ, पृ–6
13. मालती जोषी : अंतिम संक्षेप, 'क्षरण', पृ–3
14. चित्रा मुद्गल : आदि–अनादि–3, 'गेंद' पृ–214
15. ममता कालिया : ममता कालिया की कहानियाँ, 'वे', पृ–81
16. मन्नू भण्डारी : सम्पूर्ण कहानियाँ, नकली हीरे, पृ–181
17. मृदुला गर्ग : संगति–विसंगति, सम्पूर्ण कहानियाँ–1, 'उसकी कराह', पृ–156
18. अमृता प्रीतम : कच्चे रेषम सी लड़की, 'हीरे की कनी' पृ–37